



गुरदयाल सिंह के निधन पर शोक सभा
(1933 – 2016)

प्रख्यात पंजाबी कथाकार गुरदयाल सिंह उपेक्षितों के एक मसीहा के रूप में जीवनपर्यंत अथक रूप से बेआवाज़ को आवाज़ देने, अधिकारहीनों तथा पददलितों के संदर्भ में हमारे विचारों को बदलने, विशेष रूप से एक विषम वैश्विक अर्थव्यवस्था में हमें अधिक न्यायसंगत तथा सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता के प्रति जागरूक करने का काम करते रहे।

पंजाबी साहित्य-संसार में उनका पदार्पण 1957 में एक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका *पंज दरिया* में उनकी कहानी *भागवाले* के साथ हुआ था। उनके प्रथम उपन्यास *मढी दा दीवा* 1964 ने भारतीय साहित्य में एक नई प्रवृत्ति का आगाज़ किया था। उनके रचना-संसार में 10 उपन्यास, 12 कहानी-संग्रह, 3 नाटक, 4 कविता-संग्रह, 9 बाल साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त दो खंडों में आत्मकथा, अनुवाद एवं समीक्षाएँ शामिल हैं।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1975), पंजाब साहित्य अकादमी पुरस्कार (1979), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1986), शिरोमणि साहित्य पुरस्कार (1992), भारतीय ज्ञानपीठ (2000) तथा चार बार बेस्ट फिक्शन बुक पुरस्कार (1966, 1967, 1968 तथा 1972) से सम्मानित गुरदयाल सिंह को 1998 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया था। साहित्य अकादेमी द्वारा फरवरी 2016 में गुरदयाल सिंह को महत्तर सदस्यता प्रदान करने की घोषणा की गई थी।

साहित्य अकादेमी गुरदयाल सिंह की स्मृति में 29 अगस्त 2016 को सायं 4 बजे अकादेमी सभागार, प्रथम तल, रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़ शाह मार्ग, नई दिल्ली में एक शोक सभा का आयोजन कर रही है।

भारतीय साहित्य के प्रख्यात लेखक गुरदयाल सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं।

(के. श्रीनिवासराव)